पाठ-10

रहीम के दोहे

दोहों का बोध, अर्थ व सराहना

1.

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

सरलार्थ : कवि का कहना है कि जीवन में सभी के साथ हमेशा मधुर व्यवहार करो। सब पर अपने व्यवहार की ऐसी छाप छोड़ो जिससे वे हमेशा तुम्हारे साथ मेलमिलाप बनाए रखना चाहें। कभी किसी के साथ ऐसा बर्ताव मत करो जिससे दोनों के बीच कटुता उत्पन्न हो। यदि एक बार संबंधों में खटास आ गई, किसी को आपकी बात या आपका व्यवहार नहीं रुचा तो आपके बारे में उसकी राय बदल जाएगी। फिर उसके बात-व्यवहार में झिझक भी शामिल हो जाएगी।

2.

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥

सरलार्थ : रहीम की सलाह है कि यदि तुम्हारे मन में कोई वेदना है, कष्ट है, दुख है तो उसे अपने मन में ही दबा रहने दो, वहीं छिपाकर रखो। वह किसी को भी मत बताओ। उसे सुनकर कुछ ईर्ष्यालु यह सोचकर खुश तो हो सकते हैं कि बड़ा सयाना बनता था, अब पड़ गया न संकट में, कुछ निर्दयी तुम्हारा मज़ाक भी उड़ा सकते हैं। मगर उस दुख को, वेदना को, असंतोष को अथवा कष्ट को बाँट नहीं सकते। ऐसा नहीं हो सकता कि तुम्हारी जगह उन्हें वेदना होने लगे।

3.

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय॥

सरलार्थ : एक समय में कोई एक ही काम करना चाहिए। एक साथ सारे काम करने की कोशिश में सभी काम बिगड़ जाएँगे। एक भी पूरा नहीं होगा। पेड़ की केवल जड़ को सींचते रहने से ही पेड़ इतना हरा-भरा हो जाता है कि उससे फल की कामना करनेवाला तृप्त हो जाता है।

4.

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।
जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस॥

सरलार्थ : रहीम अयोध्या के राजा राम की वनवासी अवस्था को याद करते हुए कहते हैं कि संकटकाल जो न करा दे सो थोड़ा। महलों में सुख-सुविधाओं के बीच रहने के अभ्यस्त श्रीराम को चित्रकूट जैसे वनांचल में अभावों के बीच निवास करना पड़ा। जब किसी व्यक्ति को संकट आ घेरता है तब उसे ऐसे ही किसी निर्जन प्रदेश में रहना पड़ जाता है।

5.

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं॥

सरलार्थ : कवि रहीम इस दोहे में दोहे से ही संबंधित एक पते की बात कह गए हैं। उनका कहना है कि दोहों में अक्षर भले ही थोड़े होते हों, लेकिन उनका अर्थ अर्थात उनमें पिरोई हुई बात/सीख लंबी होती है, बड़ी होती है, उपयोगी होती है, दूर तक जाती है जैसे जब कोई नट उछलकर ऊपर चढ़ने का कोई करतब दिखाता है तो पहले वह अपने शरीर को सिकोड़कर छोटा कर लेता है और फिर अचानक उछलकर ऊपर चढ़ जाता है।

6.

धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पिअत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

Scanned by CamScanner

सरलार्थ : कवि रहीम कहते हैं कि तालाब का पानी धन्य है जो भले ही मात्रा में कम और मैला होता है मगर प्यासे जीवों की प्यास तो बुझाता है। उसके मुकाबले समुद्र के जल की प्रशंसा कैसे करें जो होता तो अपार है मगर तब भी उसके करीब आनेवाले प्यासे ही रह जाते हैं। चूँकि खारा (नमकीन) होने के कारण समुद्र का जल पीने योग्य नहीं होता।

7.

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत॥

सरलार्थ : स्वर पर रीझकर हिरन अपने प्राण तक दे देता है जबकि मनुष्य के प्राण अपने हित, स्वार्थ और धन बटोरने में अटके रहते हैं। रहीम कहते हैं जो किसी पर रीझने के बाद भी कुछ नहीं देते, जो किसी की पुकार पर, याचना पर कौड़ी तक नहीं देते, ऐसे मनुष्यों से तो पशु अच्छे।

8.

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

सरलार्थ : रहीम कहते हैं कि जैसे फट चुके दूध को कितना भी और कितनी बार भी क्यों न बिलोया जाए, मथा जाए, उसमें से मक्खन नहीं पाया जा सकता, उसी प्रकार जो बात एक बार बिगड़ जाए वह लाखों उपाय करने पर भी फिर से बन नहीं सकती।

9.

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

सरलार्थ : रहीम कहते हैं कि बड़ों से संबंध बन जाने पर छोटों को मत भूलिए। चूँकि जो काम सूई से किए जाते हैं, उन्हें उससे बड़ी होने पर भी तलवार नहीं कर सकती। सूई से लड़ा नहीं जा सकता और तलवार से कपड़े नहीं सिले जा सकते। हर वस्तु का अपना महत्त्व होता है।

10.

रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय॥

सरलार्थ : रहीम कहते हैं कि मुसीबत में अपनी संपत्ति ही उससे बाहर निकलने में मददगार होती है और कोई नहीं होता। जैसे पानी के न रहने पर कमल को सूर्य भी नहीं बचा सकता। दूसरा अर्थ यह भी है कि बुद्धि, अपनी मेहनत से ही काम सफल हो पाते हैं, दूसरों की संपत्ति से नहीं।

11.

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

सरलार्थ : रहीम कहते हैं कि पानी को बनाए रखो। बिना पानी के सब शून्य हो जाएगा। पानी के संपर्क से ही मोती बनता है, मनुष्य जीवित रहता है और आटा गूँधा जाता है। इस दोहे में पानी के महत्त्व को बताया गया है।

Scanned by CamScanner